AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

पूर्व बाल्यावस्था में खेल एवं विकास

ORIGINAL ARTICLE

Author
नीलू अग्रवाल
सहायक प्राध्यापक (मास्टर इन सोशल वर्क)
अग्रसेन महाविद्यालय
पुरानी बस्ती, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

पूर्व बाल्यावस्था बच्चों के जीवन का बहुत अधिक महत्वपूर्ण समय होता है जब संपूर्ण विकास की अवस्था होती है। पाठशाला में प्रवेश मतलब स्कूल पूर्व की अवस्था जब वह सामाजिक व्यवहार सीखने एवं समायोजन का समय होता है। गांव तथा नगरों में बच्चों का पूर्ण समय सामूहिक परिवार में बच्चे सभी कार्य अपने दादा–दादी, चाचा–चाची, बुआ इत्यादि के साथ सामूहिक पर्यावरण में सीख लेते थे, किंतु आज का समय एकांकी परिवार के परिवेश में बच्चे माता–पिता को ही जानते एवं पहचानते हैं तथा बच्चों की परवरिश के लिए माता–पिता को ही जूझना पड़ता है तथा व्यक्तित्व विकास एवं सर्वांगीण विकास एक चुनौतीपूर्ण कार्य होता जा रहा है इसलिए महानगरों तथा नगरों में झूला–घर का चलन काफी बढ़ चुका है, क्योंकि माता–पिता दोनों ही नौकरी के लिए बाहर घर से जाना पड़ता है एवं बच्चे को अपने घरों से दूर झूला–घर मे ऑफिस के टाइम तक छोड़ना पड़ता है और उन बच्चों को घर का व्यवहार, संस्कार एवं पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही परंपरा भी खत्म होती जा रही है। बच्चे परिवार के ही लोगों को नहीं जानते व उनके प्यार व अपनापन विमुख हो जाते हैं। 3 वर्ष का बालक प्रायः नकारात्मक प्रवृत्ति वाला, जिद्दी करने वाला, आज्ञा न मानने वाला होता है। बाल्यावस्था में परिपक्वता का जीवन पूर्व बाल्यावस्था 3 से 6 वर्ष एवं उत्तर बाल्यावस्था 7 से 12 वर्ष में विभक्त किया गया है। इस समय का उल्लेख इस आधार पर बालक एवं बालिका के जीवन के नींव पड़ने का समय कहा जा सकता है। बच्चों को आज के आधुनिक युग में परिवार, समाज की संपूर्ण देख–रेख की अत्यंत आवश्यकता होती है, तथा पढ़ाई के साथ–साथ बच्चों में खेल साधन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, जहां पर शारीरिक विकास, शारीरिक क्रियाएं, पेशीय–नियंत्रण एवं भाषाई विकास, कौशल विकास को प्रायः खिलौने की आयु कहा जा सकता है।

मुख्य शब्द

व्यवहार, बालक–बालिका, परिवार, विकास, पूर्व बाल्यावस्था, खेल.

प्रस्तावना

मुख्य रूप से भय, ईर्ष्या, स्नेहा एवं हर्ष के संवेग की अभिव्यक्ति बालकों में देखने को मिलती है। बच्चे चाहे बालक हो या बालिका परिवार में उन्हें आजकल के परिवेश में गैजेट्स (मोबाइल, टीवी, लैपटॉप, मीडिया) अन्य चीजों का प्रयोग माता–पिता ही अपने काम को सरल बनाने व बच्चों को दे देते हैं एवं परिवार सभी की जिम्मेदारी और अपनी दिनचर्या व्यस्तता और बच्चों के लालन–पालन को सरल बनाने इन्हीं (आया बाई) के भरोसे सौप दिया जाता है।

बच्चे भी अपने मनमानी चाहे खाना खाना हो, वे मोबाइल एवं टीवी को ही देखते हुए खाना खाने की जिद पर अड़ जाते हैं। यह तो केवल एक ही उदाहरण हुआ, अन्य कामों के लिए भी बच्चे माता–पिता को मोबाइल एवं टीवी की जिद पर अड जाते हैं। यदि अपनी बातों को ना मनवा पाए तो बच्चे रोते ही रहते हैं, और उन्हें माता–पिता भी मोबाइल को पकड़ा कर, दोनों सुकून का अनुभव करते हैं जिससे बच्चे भी माता पिता को उनकी जिम्मेदारियों से छुटकारा भी मिल जाता है। इन्हीं सब कारणों को देखते हुए बच्चों में खेल की प्रधानता वह खेल सुख से उचित अवसर प्रदान कर उन्हें खेल की महत्ता को उपलब्ध कराना अत्यंत आवश्यक हो गया है।

उद्देश्य

1. बच्चों में शारीरिक स्पंदन के विकास को अध्ययन करना।
2. बच्चों के व्यवहार, आत्मा विकास का अध्ययन करना।
3. बच्चों के व्यावहारिक विचार एवं उनके शारीरिक विकास को सही ढंग से विकसित करना।
4. बच्चों को गैजेट ना देकर माता–पिता अपने कार्य के साथ–साथ बच्चों का लालन–पालन सही ढंग से करें एवं सकारात्मक पहलुओ से अवगत कराना।

सर्वेक्षण विधि

शहरी क्षेत्र के छोटी बस्ती के स्कूल से 30 बच्चों में प्रश्नावली तैयार कर उन बच्चों का अध्ययन किया गया है। इनमें 10 प्रश्नावली के माध्यम से उन बच्चों का विश्लेषण व उनमें विकास और बच्चों वाले परिवर्तन का अध्ययन किया गया।

खेल के प्रकार

पूर्व बाल्यकाल में बालक–बालिकाओं के लिए 3 से 6 वर्ष सामाजिक अध्ययन में समाजशास्त्रीय के द्वारा मानक लिया गया है, इन्हें संकलन के द्वारा प्राप्त किया गया है। खेल के विभिन्न प्रकार बताए गए हैं जो निम्न प्रकार से हैं:

- **स्वतंत्र व स्वाभाविक खेलः** पूर्व बाल्यावस्था में बालक एवं बालिकाओं में जिज्ञासा प्रवृत्ति देखी जा सकती है। वह अपने लिंग के अनुसार खेल को जैसे यदि बालिका है तो किचन सेट, घर–घर का खेल खेलती हैं तथा उनके खिलौने में डॉक्टर सेट, क्ले आर्ट, ड्राइंग–पेंटिंग, गुड्डे–गुड़िया का खेल इत्यादि देखा गया है।

  बालकों में बंदूक, गुलेल, सांप–सीढ़ी, लूडो, कैरम तथा दौड़ भाग वाली जैसे बैट–बॉल, क्रिकेट, बैडमिंटन इत्यादि ज्यादा खेल पसंद करते हैं। मानसिकता के अनुसार ही पसंद व विभक्त किया गया है।
- **नाटकीय खेलः** बालिकाओं में चोर–सिपाही, गुड्डे–गुड़िया, रेल के डिब्बे बनाना, रेत से मकान बनाना इत्यादि तथा बालकों में पिता के व्यवसाय से संबंधित ध्यान आकर्षण जैसे यदि पिता इलेक्ट्रिक फर्म में कार्यरत है। तो बच्चा घर के नट–बोल्ट, स्टाटर, प्लग आदि जैसे घर के खिलौनों में शामिल करता है या यदि पिता बिल्डर है तो बिल्डिंग सेट आदि के साथ में खेलते पाया गया है। आजकल टीवी पर जो प्रसारण घर पर चलता है उसका प्रभाव बच्चों की मानसिकता पर देखा जा सकता है।
- **कल्पनात्मक खेलः** बच्चा अपने भाषा के आधार पर व्यवहार से अपने गुणों को अभिव्यक्त करता है। उसमें कल्पनाशीलता से घर का माहौल एवं वातावरण के साथ सीखता है और प्रेम उमंग, जोश, उत्तेजना को नाटकीय ढंग से प्रस्तुत करता है। उदाहरण के लिए बच्चे यदि कार्टून में तुतली भाषा में देखता है तो वह भी तुतलाना शुरू कर देता है और परिणाम स्वरूप बच्चे अधिक प्रभाव एवं बौद्धिक स्तर पर उनमें कुसमायोजन पाई जाती है।
- **रचनात्मक खेलः** अधिकांश बच्चे खेल खेलते समय रेत मिट्टी, कीचड़ एवं रंगों का प्रयोग कैंची, पेपर तथा घर पर रखी वस्तुओं से रचनात्मक खेलों में रुचि देखने को मिलती है। चित्रकार, कलाकार स्मृति आदि में बच्चे में उद्देश्य हीन एवं सृजनशीलता देखने को मिलती है।

- **प्रतिस्पर्धात्मक खेलः** लगभग 5 वर्ष की आयु में बच्चों में खेल प्रतिस्पर्धा की भावना पाई जाने लगती हैं एवं खेल के अनुसार जैसे पकड़म–पकडे, चोर–सिपाही, रस्सी कूदना, गेंद उछालना, घर से बाहर ग्राउन्ड में बच्चों के साथ सामूहिक रुप से खेलना पसंद करते हैं। अन्य बच्चों से आगे बढ़ने की होड़ लगी होती है।
- **चीजों का संग्रह करनाः** बच्चों में संग्रहण के प्रवृत्ति से अभिव्यक्त होती है। अपनी सारी चीजों को जैसे प्रिय गेम, प्रिय पुस्तक, कॉपी, ड्राइंग इत्यादि खेल के तथा उन्हें जो भी चीज प्रिय लगती हैं उसे संग्रहण कर उस को किसी से न देना तथा लेना पसंद नहीं करते हैं, उसे छुपाकर रखने की आदत हो जाती है।
- **पढ़नाः** पांच वर्ष की अवस्था में बच्चों के शब्द का विकास होना प्रारंभ हो जाता है। वे चित्र को देखकर आनंद का अनुभव करने लगते हैं एवं तोतली भाषा स्पष्ट समझ मिलने लगती है तथा खेल के साधनो में कहानियां सुनना, देखना व घटी हुई घटना को याद करना और उन्हें बताना इत्यादि बच्चे करने लगते हैं इसमें मोबाइल तस्वीरें कॉमिक्स, गेम मुख्य पात्र को पहचाना, वह उनके ही अनुसार अपना भी वैसे ही वर्णन करना इत्यादि।

  लड़की–लड़का को स्वयं का ज्ञान और अपने अंगों को पहचाना, व शारीरिक विकास की प्रधानता इस उम्र में रहती है। पूर्व बाल्यावस्था में बच्चे मनोरंजन के माध्यम से सीखने पर ध्यान देने के लिये अभिभावको को अत्यंत आवश्यक हो जाता है क्योंकि यही वह उम्र होती है जब बच्चे जो देखते हैं हूं–बहू वैसा ही व्यवहार करते हैं।

  एम्स व रेनिशन 1954 के अनुसारः छोटी बच्ची परियों की कहानियां सुनना अधिक पसंद करते हैं।

  कुके 1952 के अनुसारः बच्चे एक–दूसरे के साथ खेलने के लिए माता व पिता के करीब जाता है।

खेल के माध्यम से बच्चों में सामाजिक अंतः क्रिया की वृद्धि होती है। बालक में व्यावहारिक परिपक्वता का विकास होता है। समाजशास्त्रीय तथा अभिभावकों की नैतिक जिम्मेदारी होती हैं कि बालक व बालिकाओं का सर्वांगीण विकास हो जिसमें उनमें भविष्य में नकारात्मक गुणों को रोका जा सके तथा सही दिशा व आधुनिक शिक्षा साहस के साथ अपना सके। सामाजिक भावना का विकास, खेल शिक्षा का विकास, सृजनात्मक नैतिक गुणों का विकास इत्यादि हो सके एवं आधुनिकता को अपना सके व मानसिक तनाव कम कर सके।

बालक–बालिका पूर्व बाल्यावस्था में एकदम गीली मिट्टी की तरह होते हैं। जो भी वातावरण में वे देखते हैं चाहे वह गलत हो या सही वह जीवन में इस उम्र में जो देखा वह सीखा और जो भी वह कार्य करता है उस पर्यावरण का प्रभाव इन बच्चों पर कार्बन की तरह छप जाता है। खेल के साधन भी बच्चों के शारीरिक, मानसिक प्रभाव को समझ कर ही बनाया जाता है। शिक्षण के क्षेत्र में बच्चों में मनोरंजन के साथ–साथ उनके प्ले स्कूल में भी मनोरंजन के साधन वह समूह में बच्चों को अन्य कार्य के द्वारा प्रभावित कर उन्हें सिखाती है।

विश्लेषणात्मक अध्ययन

सर्वे के अध्ययन द्वारा हमने पाया कि अधिकतर परिवार एकांकी परिवार से हैं। अकेले होने के साथ–साथ बच्चे खिलौने से कम तथा टीवी एवं मोबाइल में सारा समय व्यतीत करते हैं। अपने कार्य को अकेले ही करते व बच्चों की बोली तुतला कर अधिक बोलते हैं। स्कूल में ग्रुप में बच्चे खेलते व टिफिन दूसरों का खाना अधिक पसंद करते हैं। बच्चे समायोजन व्यवहार करने के साथ–साथ अपनी चीजें जैसे खिलौने व प्रिय वस्तुओं को बांटना या बैठकर उपयोग करना पसंद नहीं करते हैं। बच्चे कहानियां सुनना व बाहर में खेल खेलना अधिक पसंद करते हैं।

निष्कर्ष

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि बच्चे टीवी देखने में ज्यादा दिलचस्पी व उम्र से अधिक बड़े दिखाई दे रहे हैं तथा उनके व्यवहार में असामाजिक व्यवहार दिखाई देते हैं तथा उनकी बुद्धि भी तीव्र है। मौसम के अनुसार बच्चे कपड़े पहनते हैं।

अभिभावकों से जानकारी प्राप्त हुई है कि बच्चे खिलौनों के साथ में खेल कर वह अपने कार्य में ही अकेले मन लगाते हैं तथा शारीरिक गति भी मध्यम होती है। यह बच्चे सामंजस्य व्यवहार करते हैं, व एकल परिवार में रहने

के साथ–साथ रोज उनके यूनिफार्म साफ–सुथरा पहनते हैं, परंतु बच्चे तोतला कर बोलते हैं, वह ग्रुप में ही खेलना पसंद करते हैं। वही कुछ अभिभावकों का मत है कि बच्चे दूसरों के टिफिन स्कूल में खा लेते हैं तथा बच्चों को नए–नए कपड़े पहनना बहुत पसंद है। अपनी मनमानी यह बच्चे करते हैं तथा बातूनी व भाई–बहनों के साथ में खेलना पसंद करते हैं। इन बच्चों का शारीरिक विकास पूर्ण होता है। अध्ययन के आंकड़ो के अनुसार कुछ बच्चों का संपूर्ण विकास नहीं हुआ है तथा यह बच्चे अग्रेसिव स्वभाव के है। अपरिचितो का डर, व बातों व कहानियों को ध्यान से नहीं सुनता, वह कुछ पहचान सही नहीं कर पाता है। भावनात्मक रूप से यह बच्चा कमजोर मालूम पड़ता है।

सुझाव

सभी बच्चो का वातावरण में परवरिश मे अंतर होने के कारण अलग–अलग स्वभाव में भिन्नताए पाई जाती है। अध्ययन सर्वे के अनुसार बच्चों को गैजेट ना देकर, माता–पिता अपने कार्य को आरामदायक बनाने से पूर्व उन्हें समय देना, अपने संस्कार को सिखाना, उन्हें समय देना अत्यंत आवश्यक है। महंगी वस्तुओं व खिलौनो से ज्यादा प्रेम परिवार, संवेगात्मक विकास की आवश्यकता है, जिसे स्कूल से ज्यादा बच्चे अपने घर पर ही सीखते हैं, जो जीवन की नीव की तरह काम करती है।

संदर्भ सूची

1. सिंह राजेंद्र प्रसाद, (1997) *"विकासात्मक मनोविज्ञान",* एन.ए.बी. प्रिटिंग यूनिट फेज 1, नई दिल्ली, पृ. 135।
2. उपाध्याय जितेंद्र कुमार, (1997) *''बाल्यावस्था मनोविज्ञान एवं विकास"* एन.ए.बी. प्रिटिंग यूनिट फेज 1, नई दिल्ली, पृ. 145।
3. भार्गव महेश (2013) *"आधुनिक मनोविज्ञान"* एच. पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा, पृ. 50।
4. सिंह अरुण कुमार, (2005) *"उच्चतर नैदानिक मनोविज्ञान",* राखी प्रकाशन, आगरा, पृ. 201।
5. Chandra Shushil, (1967) *Sociology of Deviation In India,* Allied published Bombay P-1.
6. Goyel C., (1965) “Home and Social Situation”, unpublished PhD thesisAgra.

––==00==––